



ताल-तलैयाँ से घिरा भोपाल का नेशनल पार्क



अन्य संग्रहालयों या फिर सर्कसों से भी कुछ जानवर यहा लाए गए हैं। लगभग पांच किलोमीटर क्षेत्र में फैले इस राष्ट्रीय उद्यान का मुख्य द्वार मुख्यमंत्री निवास के निकट से होकर भदमदा की ओर जाता है। उद्यान के चारों ओर हरियाली बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर खींच लेती है। शैल-शिखरों से घिरे उक्त उद्यान के पास ही परमारवंशीय राजा भोज द्वारा निर्मित भोपाल का बड़ा तालाब है जिसके बारे में उक्ति है कि तालों में भोपाल ताल बाकी सब तलैया, रानियों में कमलाबती बाकी सब.....प्रचलन में है।

मध्यप्रदेश की राजधानी का नाम सुनते ही यहाँ की गौरव ताल-तलैयाँ, शैल-शिखरों की याद आना लाजिमी हैं। जहाँ भोपाल ने राष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेट हाकी सहित देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद तक पर अपनी छाप छोड़ी वहीं राष्ट्रीय उद्यानों के क्षेत्र में भी किसी से कम नहीं हैं। यहाँ बना नेशनल पार्क को श्री-इन-वन कहना कोई अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा।

ऐसा सुन्दर उद्यान नेशनल पार्क होने के साथ-साथ चिड़िया घर (जु) तथा जंगली जानवरों का बचाव केन्द्र भी है। 445 हैक्टेयर में फैले इस नेशनल पार्क में मिलने वाले जानवरों को जंगल से पकड़कर नहीं लाया गया है। यहाँ जो जानवर हैं वे लावारिस, कमजोर, रोगी, घायल या बूढ़े थे अथवा जंगलों से भटककर ग्रामीण शहरों क्षेत्रों में आ गये थे तथा उनका बाद में आशियाना यहाँ बनाया गया।

अन्य संग्रहालयों या फिर सर्कसों से भी कुछ जानवर यहा लाए गए हैं। लगभग पाँच किलोमीटर क्षेत्र में फैले इस राष्ट्रीय उद्यान का

भोपाल नेशनल पार्क में प्रवेश करने से पूर्व यह अनुभव भी नहीं कर सकते की आप किसी जंगल की सैर करने जा रहे हैं। रामू गेट से चीकू गेट तक की लगभग पाच किलोमीटर की दूरी आप ऐसे तय करेंगे कि आपको अहसास ही नहीं होगा कि आप किसी ऐसे अद्भुत स्थल की सैर कर रहे हैं जहाँ एक ओर जंगली जानवरों भालू, शेर, हिमालयी भालू, तेंदुए और बाघ के बाड़े आते हैं तो दूसरी ओर तालाब से आ रही ठंडी हवाएं और जल की तरंगें मनोहारी लगती है कि आप भोपाल नेशनल उद्यान को अंतिम समय तक भूल नहीं सकते।

आते हैं तो दूसरी ओर तालाब से आ रहा ठंडा हवाएं और जल की तरंगें मनोहारी लगती है कि आप भोपाल नेशनल उद्यान को अंतिम समय तक भूल नहीं सकते। गर्मी के दिनों में प्रवासी पक्षी भी इसी जगह पर आकर सुकून का अनुभव करते हैं। यहाँ कि विशेषता यह है कि आप पैदल ही पांच किलोमीटर का दायरा कैफे का स्वादिष्ट भोजन, नस्ला करते हुए समझ ही नहीं सकते की आपने आने जाने में इतनी अधिक दूरी कैसे तय कर ली।

भोपाल वनविहार तक पहुंचने के लिए देश के लगभग सभी स्थानों से हवाई, रेल एवं बस सेवा उपलब्ध हैं। यहीं से टैक्सियों के द्वारा, पैदल अथवा साइकल से आप वन विहार के मनमोहक दृश्य को अपने जेहन में बिठा सकते हैं। यहाँ का बिड़ला मंदिर, गुफा मंदिर, कर्पूरी वाली माता का मंदिर, कालीघाट, मनुआभान की टेकरी, एशिया की सबसे बड़ी ताजुल मस्जिद, गंगा-जमुनी तहजीब की प्रतीक जामा मस्जिद, प्राचीन कमला पार्क,

छोटा तालाब, मोतिया तालाब, ताजमहल, लोकप्रियता के शिखर पर अपनी अलग ही छाप छोड़ते हैं। लेकिन भोपाल का शमशान घाट भी (मृत्यु का अंतिम पड़ाव स्थल) किसी पर्यटन स्थल से कम नहीं है। ताजुल मस्जिद में प्रतिवर्ष लगने वाले इज्तिमा जिसमें विश्व के सभी देशों से लोग आकर सम्मिलित होते हैं।

भोपाल के आसपास के लगभग सौ किलोमीटर क्षेत्रों में सलकनपुर, भोजपुर, तरावली, सीहोर के सिद्ध गणेश, साची, होशंगाबाद, रायेसन मार्ग पर स्थित कंकाली देवी का मंदिर (जो देश में एकमात्र कृष्ण मुद्रा काली का मंदिर है), केहरी महादेव अर्थात शरीरवाले महादेव सहित कदम-कदम पर ऐसे स्थल विकसित हैं कि आप की भोपाल से जाने की इच्छा ही नहीं होगी।

भोपाल का पान खाना नहीं भूले क्योंकि यह अपनी विशिष्टता के लिए देश में अपना स्थान रखता है। विश्व की सबसे बड़ी औद्योगिक गैस त्रासदी झेल चुके इस शहर के बारे में कहा जा सकता है कि 'सारे पर्यटन बार-बार भोपाल पर्यटन एकबार।' आपको यहाँ पर रुकने को विवश कर देगा। यहा की हिन्दू-मुस्लिम तहजीब देखते ही बनती है।

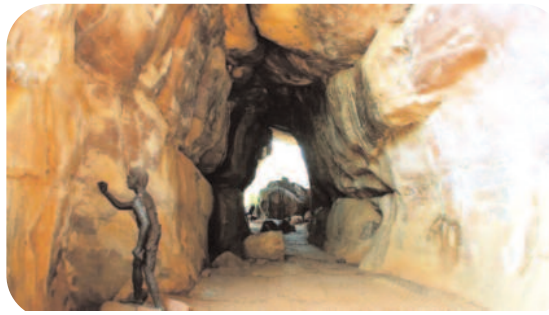


मुख्य द्वार मुख्यमंत्री निवास के निकट से होकर भदमदा की ओर जाता है। उद्यान के चारों ओर हरियाली बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर खींच लेती है। शैल-शिखरों से घिरे उक्त उद्यान के पास ही परमारवंशीय राजा भोज द्वारा निर्मित भोपाल का बड़ा तालाब है जिसके बारे में उक्ति है कि तालों में भोपाल ताल बाकी सब तलैया, रानियों में कमलाबती बाकी सब.....प्रचलन में हैं। वनविहार के नाम से ख्यात उक्त उद्यान के आसपास सांस्कृतिक कला का केन्द्र भारत भवन, वोट क्लब, मानव संग्रहालय, कमला पार्क, केरवा डेम, कमला पार्क, दूरदर्शन सहित अनेक ऐसे स्थानों से घिरा हुआ भोपाल नेशनल

पार्क को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा 18 जनवरी 1983 में प्राप्त हुआ था। यूं तो प्रदेश के ग्वालियर, इंदौर में भी स्माल चिड़ियाघर हैं जिनकी देखरेख नगर निगमों द्वारा की जाती है।

भोपाल नेशनल पार्क में प्रवेश करने से पूर्व यह अनुभव भी नहीं कर सकते की आप किसी जंगल की सैर करने जा रहे हैं। रामू गेट से चीकू गेट तक की लगभग पाच किलोमीटर की दूरी आप ऐसे तय करेंगे कि आपको अहसास ही नहीं होगा कि आप किसी ऐसे अद्भुत स्थल की सैर कर रहे हैं जहाँ एक ओर जंगली जानवरों भालू, शेर, हिमालयी भालू, तेंदुए और बाघ के बाड़े

भोपाल के निकट भीमबेटका



मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है भीमबेटका की हजारों साल पुरानी गुफाएं। आदिपुरुष एवं जीवों के विभिन्न रूपों में अनेक प्रकार के प्राचीन चित्र होने के साथ ही आदिमानव द्वारा निर्मित भीती चित्रों की दुर्लभ श्रृंखला देखते ही बनती है। यहा पिकनिक के लिए उपयुक्त स्थान है। यहाँ पुरातत्व का अथाह खजाना भरा पड़ा है। सैलानी यहाँ सदैव आते-जाते रहते हैं। भोपाल-होशंगाबाद रोड पर स्थित उक्त स्थल पर आवागमन 24 घण्टे उपलब्ध रहता है।

विंध्याचल की पहाड़ियों पर लगभग दो हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित मांडू जिसे मांडवगढ़ के नाम से भी जाना जाता है हिंडोला महल, रानी रूपमती का महल, जहाज महल, जामा मस्जिद, अशरफी महल, जैन धर्म का 1472 ई. की पार्वनाथ की रथेत पद्मासन प्रतिमा देखने योग्य है। नीलकंठ महल की दीवारों पर अकबरकालीन कला की नक्काशी भी देखने योग्य है। अन्य स्थलों में हाथी महल, दरियाखान की मजार, दाई का महल, दाई की छोटी बहन का महल, मलिक मघत की मस्जिद और जाली महल भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

मध्यप्रदेश में यों तो पर्यटन स्थलों का अथाह भंडार है किन्तु उनमें भी मांडू अपनी विशिष्टता के लिए अपना अलग ही स्थान रखता है। कहने वाले इसे खंडहरों के गांव के नाम से भी संबोधित करते हैं परंतु इन खंडहरों के बोलते पत्थर हमें इतिहास के कथा बयां करते हैं जिसमें रानी रूपमती और बादशाह बाज बहादुर के अमर प्रेम और मांडू के शासकों की समृद्ध विरासत व

की मस्जिद और जाली महल भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। यहाँ माई ओर जून में गर्मी अधिक पड़ने के कारण जाना उचित नहीं है। जुलाई से मार्च तक यहाँ सैलानियों का जमघट लगा रहता है। यहीं एक रेवा कुंड का निर्माण बादशाह बाजबहादुर ने अपनी प्रेमिका रानी रूपमती के महल में पानी की प्यास व्यवस्था के स्त्रोत के रूप में करवाया था।

पर्यटन में अलग ही पहचान रखता है मांडू



शानो-शोकत के साथ ही हरियाली से आच्छादित पर्यटकों का स्वागत करते जहाँ के प्राचीन दरवाजे। धुमावदार रास्तों के साथ ही सीताफलों से लबालब भरे पेड़, कमलगेत, इमली के विषाल वृक्ष बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करे बिना नहीं रहते। विंध्याचल की पहाड़ियों पर लगभग दो हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित मांडू जिसे मांडवगढ़ के नाम से भी जाना जाता है हिंडोला महल, रानी रूपमती का महल, जहाज महल, जामा मस्जिद, अशरफी महल, जैन धर्म का 1472 ई. की पार्वनाथ की श्वेत पद्मासन प्रतिमा देखने योग्य है। नीलकंठ महल की दीवारों पर अकबरकालीन कला की नक्काशी भी देखने योग्य है। अन्य स्थलों में हाथी महल, दरियाखान की मजार, दाई का महल, दाई की छोटी बहन का महल, मलिक मघत



मांडू में 12 प्रवेश द्वार 45 किलोमीटर की परिधी में निर्मित हैं। जिनमें 'दिल्ली दरवाजा प्रमुख हैं। शैल और चट्टानों से सराबोर मांडू के बारे में यह जानना आवश्यक है कि मालवा के राजपूत परमार शासक भी बाहरी आक्रमण से अपनी रक्षा के लिए मांडू को ही सबसे सुरक्षित जगह मानते थे।

मांडू में देवादिदेव नीलकंठ शिवजी का मंदिर है जिसमें जाने के लिए अंदर सीढ़ी उतरना पड़ता है। इस मंदिर के सौन्दर्य और पेड़ों से घिरे तालाब से एक धार नीचे शिवजी का अभिषेक करती हुई प्रतीत होती है।

पांच बच्चों की मौत रिकॉर्ड में नहीं

3 पंचायत में 2 महिला और 1 पुरुष सरपंच बने

ग्रामीण बोले- अब अफसर आ रहे ; दो दिन पहले यहीं आए थे राहुल गांधी

राष्ट्रबाण

संवाददाता

राष्ट्रबाण

rashtabaan.in

बालाघाट के आदिवासी अंचल में बच्चों की मौतों के आंकड़ों को लेकर प्रशासन और कांग्रेस के दावों में अंतर सामने आया है। प्रशासनिक रिकॉर्ड में अब तक 32 बच्चों की मौत की पुष्टि की गई है, जबकि कांग्रेस ने 44 मौतों की सूची जारी करने का दावा किया है। कांग्रेस के मुताबिक, इस सूची में नन्ही पंचायत के जगला गांव के 4 और तलबुटोला के 1 बच्चे की मौत भी शामिल है। इन परिवारों से कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 1 अक्टूबर को जगला में मुलाकात की थी। जगला में मृत बच्चों के परिवारों से बात की। इस दौरान अधिकतर माताओं का एक ही जवाब मिला कि उन्हें स्वास्थ्य सेवाएं और पोषण आहार नहीं मिला। इसके साथ ही प्रशासन की कई खामियां सामने आईं।

नन्ही पंचायत के जगला-तलबुटोला की 5 मौतों पर सवाल

कांग्रेस का दावा है कि नन्ही पंचायत के जगला और तलबुटोला में अगस्त-सितंबर के दौरान 5 बच्चों की मौत हुई थी। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि इन मौतों का रिकॉर्ड आंगनबाड़ी स्तर पर मौजूद है, लेकिन ये प्रशासनिक मौतों की सूची में शामिल नहीं हैं। इन मौतों को सरकारी आंकड़े में शामिल क्यों नहीं किया गया, इसकी पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी।

कहीं भरण-पोषण की व्यवस्था नहीं, तो कहीं डॉक्टर के इलाज को तरसे: जगला की सवनी धुर्वे के 2 बच्चों में से एक की मौत हो गई। उनके मुताबिक, करीब एक महीने के बेटे बिस्तु के शरीर पर दाने आए और उसे सदी-खांसी के

मृत बच्चों के खोपी केन्द्र तलबुटोला, जगला									
आयु/लिंग	बच्चे का नाम	माता का नाम	पिता का नाम	जन्म तिथि	उम्र	मृत्यु तिथि	मृत्यु स्थान	निर्देश	क्या
1	तलबुटोला सरिता धुर्वे	सुकवती	मनरसिंह	12-08-2026	उम्र 12	09-09-2026	निर्देश		
2	जगला आनित धुर्वे	हिरोदी	जेतबल्ल	7-08-2026	16 मिनट	09-09-2026	निर्देश		
3	जगला निलम धुर्वे	बनमोहन	नमरु	03-08-2026	3 2 2 8	09-09-2026	निर्देश		
4	जगला बित्तु धुर्वे	सबनीधुर्वे	रामपत	03-08-2026	1 मिनट	09-09-2026	निर्देश		
5	जगला सरस्वती धुर्वे	तिनोबर्बा	खोसो	16-08-2026	5 मिनट	30-09-2026	निर्देश		

राहुल गांधी ने परिवारों से मुलाकात की

राहुल गांधी 1 अक्टूबर को बालाघाट के जगला गांव पहुंचे थे। उन्होंने बीमारी और स्वास्थ्य समस्याओं के बीच बच्चों को खोने वाले बेगा आदिवासी परिवारों से मुलाकात की और स्वास्थ्य सुविधाओं, पोषण और सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी ली। राहुल गांधी ने इस मुद्दे को लेकर सरकार पर सवाल उठाए हैं।



साथ पसलियों में दर्द था। उसकी 2 सितंबर को घर में मौत हो गई। सवनी ने बताया कि उन्हें पूरक पोषण आहार नहीं मिलाता था। सवनी की 3 साल की बड़ी बेटी अभी जिंदा है। हिरोदी धुर्वे ने बताया कि उनके 3 बच्चों में से 16 दिन के बेटे आबित धुर्वे की 23 मई को मौत हो गई। हिरोदी के मुताबिक, बच्चे को पीलिया

और बुखार था। डॉक्टर के नहीं आने पर झोलाछाप डॉक्टर से इलाज कराया। वे बताती हैं कि उस वक्त कोई डॉक्टर गांव नहीं आए थे। **निमोनिया से 5 महीने से लेकर ढाई साल की बच्ची की मौत** जगला की बमनीन की 4 बेटियां और 2 बेटों में से ढाई साल की बेटी निलम धुर्वे

की 2 अगस्त को निमोनिया से मौत हुई थी। राहुल गांधी ने अपने दौरे के दौरान बमनीन के परिवार से भी मुलाकात की थी। इस दौरान राहुल गांधी ने बमनीन के बेटे लोकेश को गोद में भी उठया था। परिवार की शिकायत है कि गांव में स्वास्थ्य सेवाएं नियमित रूप से नहीं पहुंचती हैं। जगला की तिजोबाई धुर्वे बताती हैं की उनकी 5 महीने

18 से कम उम्र वाली मांओं को पोषण आहार का लाभ नहीं

जनजातीय कार्य विभाग की सहायक आयुक्त शकुंतला डामोर के अनुसार, 18 वर्ष से कम उम्र में विवाह करने वाली महिलाओं के नाम पोर्टल पर दर्ज नहीं हो पाने के कारण उन्हें पूरक पोषण आहार योजना का लाभ मिलने में दिक्कत आती है। साथ ही उनका कहना है कि घटना के बाद 30 से ज्यादा ऐसी महिलाओं के नाम पूरक पोषण आहार योजना में जोड़े गए हैं, जिन्हें पहले इसका लाभ नहीं मिलता था। यह जानकारी यह सवाल जरूर उठती है कि इन लाभार्थियों के नाम पहले योजना में क्यों नहीं थे।

सोमवार से राज्य स्तरीय टीम करेगी जांच

सीएमएचओ के मुताबिक, बच्चों की मौत के कारणों की जांच के लिए सात सदस्यीय राज्य स्तरीय टीम सोमवार को बालाघाट आएगी। इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख शत्रुघ्न दाहिया ने बताया कि प्रशासनिक रिकॉर्ड में दर्ज मौतों के अलावा अगर इस दौरान अन्य बच्चों की मौत हुई है, तो उनकी भी जांच की जा रही है। इसके लिए जिला स्तरीय पांच सदस्यीय टीम बनाई गई है। जो जांच कर इसकी रिपोर्ट कलेक्टर को सौंपेगी। उपलब्ध रिपोर्टों में बच्चों की मौतों के लिए मलेरिया, खसरा, कुपोषण और अन्य स्वास्थ्य संबंधी कारणों की जानकारी सामने आई है। एक केंद्रीय जांच में भी किसी एक बीमारी को सभी मौतों का कारण नहीं माना गया है।

की बेटी सरस्वती धुर्वे की 30 अगस्त को मौत हुई। सरस्वती उनकी पहली संतान थी और उसे निमोनिया हुआ था। परिवार का दावा है कि सरस्वती का नाम प्रशासनिक मौतों की सूची में नहीं है।

अधिवक्ता कीर्ति कुमार ठाकुर का निधन

रविवार को निज निवास से प्रातः 11 बजे निकलेगी अंतिम यात्रा, मोक्षधाम में होगा अंतिम संस्कार

राष्ट्रबाण

संवाददाता

राष्ट्रबाण

rashtabaan.in

प्रगतिशील कुनबी समाज के विधिक सलाहकार अधिवक्ता कीर्ति कुमार ठाकुर (70) का शनिवार को नागपुर में हृदयघात से निधन हो गया। मूलतः जिले के भानेगांव मोहारा के रहने वाले कीर्ति



उत्कृष्ट विद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने चलाया स्वच्छता अभियान

राष्ट्रबाण

संवाददाता

राष्ट्रबाण

rashtabaan.in

गांधी जयंती के अवसर पर उत्कृष्ट विद्यालय बालाघाट के एनसीसी कैडेट्स ने स्वच्छता अभियान चलाया गया। यह अभियान 6 म.प्र बटालियन एनसीसी बालाघाट के कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट

कर्नल बी.एस. जोधा के मार्गदर्शन और विद्यालय के प्राचार्य शरद ज्योतिषी के नेतृत्व में आयोजित किया गया।

इस अभियान के तहत कैडेट्स ने प्रथम विद्यालय में गांधीजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पूजा अर्चना की गई इसके पश्चात कैडेट्स ने बापू को नमन करते हुए

श्रद्धा सुमन अर्पित किए। देशभक्ति गीत 'रघुपति राघव राजा राम...' और 'वैष्णव जन तो...' प्रस्तुत दी गई। विद्यालय एवं आसपास के क्षेत्र में साफ सफाई की और लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। कैडेट्स ने 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' और 'गांधी जी का सपना, स्वच्छ भारत अपना' जैसे

नारों के साथ रैली भी निकली। विद्यालय के प्राचार्य शरद ज्योतिषी सर ने सभी कैडेट्स के प्रयासों की सराहना की विद्यालय के एनसीसी सेकंड ऑफिसर कल्पना ठोंबरे और तुषार सिंह धुर्वे ने छात्रों को प्रोत्साहित किया। इस अभियान में स्कूल के सभी शिक्षक गण भी सम्मिलित रहे।

15 साल बाद मिला मौका, 40 दिन की तपस्या के बाद बनेंगे हनुमान

हनुमान स्वरूप चोला धारण करेंगे साधक चेतन चौरे



शोभायात्रा में हनुमान का रूप धारण करने वाले साधक को अष्टधातु से बना 40 किलो वजनी मुकुट पहनना पड़ता है।

40 दिनों का कठिन नियम

और एक साल का ब्रह्मचर्य चौर हनुमान का चोला धारण करने के लिए साधक को बेहद कठोर धार्मिक नियमों और कठिन तपस्या से गुजरना पड़ता है। चेतन

चौर ने बताया कि वे एक वर्ष से ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं और अब 40 दिनों के लिए श्री राम मंदिर में ही रहकर तपस्या कर रहे हैं। इस दौरान उन्हें बिना नमक का भोजन

करना पड़ता है। इसके साथ ही 40 किलो का मुकुट लेकर चलने के लिए वे सुबह-शाम दौड़ने और पैदल चलने का कड़ा अभ्यास भी कर रहे हैं।

सेवा मेरा योगदान अभियान के तहत 6 अक्टूबर को बच्चों के लिए लगेगा निःशुल्क हृदय रोग शिविर

राष्ट्रबाण

संवाददाता

राष्ट्रबाण

rashtabaan.in

सेवा संकल्प अभियान-2026 के अंतर्गत 'सेवा मेरा योगदान' अभियान के तहत 06 अक्टूबर को डीईआईसी, जिला चिकित्सालय बालाघाट में बच्चों के लिए एक दिवसीय निःशुल्क हृदय रोग शिविर आयोजित किया जाएगा। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. शत्रुघ्न दाहिया ने बताया कि 06 अक्टूबर को आयोजित शिविर में जिले के सभी विकासखंडों से हृदय रोग से पीड़ित बच्चों की जांच की जाएगी। बच्चों की हृदय संबंधी जांच इको मशीन के माध्यम से की जाएगी। आरबीएसके टीम द्वारा जिले में ऐसे 70 बच्चों को

सर्जरी भी होगी निःशुल्क

जांच के दौरान यदि किसी बच्चे को हृदय की सर्जरी के लिए चयनित किया जाता है, तो उसकी सर्जरी राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत मुख्यमंत्री बाल हृदय उपचार

चिन्हित किया गया है। सीएमएचओ डॉ. दाहिया ने सभी खंड चिकित्सा अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि चिन्हित सभी बच्चों को शिविर में अनिवार्य रूप से लाकर उनकी जांच कराई जाए, ताकि कोई भी बच्चा जांच से वंचित न रहे। शिविर के नोडल अधिकारी जिला शोध हस्तक्षेप प्रबंधक श्री राजाराम चक्रवर्ती को बनाया गया है। उन्होंने बताया कि शिविर में सभी जांच एवं

योजना के तहत निःशुल्क कराई जाएगी। सर्जरी के दौरान मरीज के ठहरने, भोजन, यात्रा एवं आवश्यक दवाइयों की सुविधा भी निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएगी।

आवश्यक सेवाएं पूर्णतः निःशुल्क रहेंगी। बच्चों के अभिभावकों से अपील की गई है कि वे शिविर में बच्चे के साथ जन्म प्रमाण पत्र, आयुष्मान कार्ड, आधार कार्ड, समग्र आईडी, बच्चे के दो फोटो तथा पूर्व की जांच रिपोर्ट, यदि उपलब्ध हो, अवश्य लेकर आएंगे। सिविल सर्जन डॉ. निलय जैन ने बताया कि बच्चों में हृदय रोग से संबंधित कुछ संभावित लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

राष्ट्रबाण

संवाददाता

राष्ट्रबाण

rashtabaan.in

बालाघाट मुख्यालय में दशहरा पर निकलने वाले 63वें चल समारोह की तैयारियां शुरू हो गई हैं। इस बार महावीर सेवादल समिति के चल समारोह में साधक चेतन चौरे वीर हनुमान का स्वरूप (चोला) धारण करेंगे।

पिछले 15 वर्षों से समिति में सेवाएं दे रहे चेतन चौरे को यह सौभाग्य 15 साल के लंबे इंतजार के बाद मिला है। शनिवार को महावीर सेवादल समिति ने प्रेसवार्ता में यह जानकारी साझा की। दशहरा पर दो से ढाई किलोमीटर तक निकलने वाले इस



बालाघाट के भरवेली, एकोड़ी और खुरपुड़ी में विजेताओं की घोषणा

राष्ट्रबाण

संवाददाता

राष्ट्रबाण

rashtabaan.in

बालाघाट की तीन पंचायतों में हुए उपचुनाव के नतीजे 3 अक्टूबर को घोषित कर दिए गए हैं। इनमें दो महिला और एक पुरुष सरपंच चुने गए हैं। भरवेली पंचायत से कल्पना संतकुमार वासनिक ने 70 वोटों से जीत हासिल की। वारासिवनी जनपद की एकोड़ी पंचायत में सरिता कैलाश मेश्राम 147 वोटों से जीतीं। वहीं, लालबर्बा जनपद की खुरपुड़ी पंचायत में धनाराम उर्फ धन्नु पगरवार ने 24 वोटों से जीत दर्ज की। इन सीटों पर 29 सितंबर को मतदान हुआ था।

15 केंद्रों पर वोटों की गिनती हुई

रिटर्निंग अधिकारी तहसीलदार छवि पंत ने बताया कि 15 मतदान केंद्रों पर वोटों की गिनती तीन टेबल पर पांच राउंड में ईवीएम मशीनों से की गई। भरवेली में पूर्व सरपंच गीता अनिल बिसेन को अविश्वास प्रस्ताव के बाद पद छोड़ना पड़ा था। खुरपुड़ी में सरपंच धन्नालाल कावरे के निधन से सीट खाली हुई थी।

यहां निर्विरोध चुने गए

जनपद क्षेत्र की बूढ़ेना, पाथरवाड़ और मानेगांव में तीन पंच निर्विरोध चुने गए। नतीजे आने के बाद विजयी प्रत्याशियों के समर्थकों में उत्साह देखा गया।

एकोड़ी में सरपंच को धारा 40 से हटाया था एकोड़ी में सरपंच मोनिका राहुल मेश्राम को धारा 40 के तहत पद से हटाया गया था। जिसके बाद सरिता कैलाश मेश्राम, स्थानापन्न सरपंच थीं। हाल में हुए उपचुनाव में, सरिता कैलाश मेश्राम ने अपनी प्रतिद्वंद्वी रेखा धरमदास मेश्राम को 147 मतों से पराजित किया।

धनाराम पगरवार के सिर सजा सरपंच का ताज, महेश कावरे को दी मात



बालाघाट। ग्राम पंचायत खुरपुड़ी के सरपंच पद के चुनाव परिणाम घोषित हो चुके हैं। बेहद कड़े और रोमांचक मुकाबले में धनाराम पगरवार ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी महेश कावरे को 24 मतों के अंतर से हराकर जीत हासिल की है। चुनाव परिणामों के अनुसार, धनाराम पगरवार को कुल 536 मत प्राप्त हुए, जबकि महेश कावरे को 512 मतों से ही संतोष करना पड़ा। अंतिम क्षणों तक चले इस कड़े मुकाबले में धनाराम ने 24 वोटों की बढ़त बनाकर ग्राम पंचायत खुरपुड़ी के स्थायी सरपंच पद पर अपना कब्जा जमा लिया है। जीत की घोषणा होते ही उनके समर्थकों में उत्साह का माहौल है।

पंचायतों में प्रत्याशियों को मिले इतने मत

भरवेली पंचायत में पांच प्रत्याशी चुनाव मैदान में थे। जिसमें गीता अनिल बिसेन को 1940 मत, उर्मिला लालचंद मालेश को 13, सविता वाहन को 140, कल्पना संतकुमार वासनिक को 2010, अनिता मिलिंद भालेकर को 19 मत मिले। जबकि नोटा में 24 मत पड़े। इसी प्रकार एकोड़ी पंचायत में पांच प्रत्याशियों में रेखा धरमदास मेश्राम को 592, संगीता राकेश मेश्राम को 181, सरिता कैलाश मेश्राम को 739, मीराबाई मेश्राम को 204 मत मिले। जबकि नोटा में 9 मत पड़े। खुरपुड़ी में दो प्रत्याशी चुनाव मैदान में थे। जिसमें धनाराम उर्फ धन्नु पगरवार को 536 और महेश कुमार कावरे को 512 मत मिले। जबकि नोटा में 5 मत पड़े।

